भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

डॉ0 ललिता

सहायक प्राध्यापक, राजनीतिक विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय,
बी0 बी0नगर, बुलन्दशहर

सारांश

भारत की संस्कृति अपने लंबे इतिहास अद्वितीय भूगोल और विधि जनसांख्यिकी के द्वारा बनी है। भारत की भाषाओं धर्मो, नृत्य, संगीत, वास्तुकला और कस्टम देश के भिन्न – भिन्न स्थानों में भिन्न – भिन्न होती है। उसके बावजूद उनमें समानता है। भारत की संस्कृति इन विविध उपसंस्कृतियों का मेल है। जोकि भारतीय उपमहाद्वीप की परम्पराओं में फैली हुई हैं। और यह सदियों पुरानी है। भारत में पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति का अनुगमन व अनुपालन धडल्ले से किया जा रहा है। लोग इसके अनुपालन कर स्वयं को आधुनिक व विकसित देशों के समक्ष मानने लगे है। बीते जमाने में पाश्चात्य देशों के मैगस्थनीज ह्वैनसांग जैसे महान दार्शनिकों ने भी भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ बताया था । तो भी क्यो आज भारतीय ही पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने में अडें हुए है। सच तो यह है कि हमें अतीत को भी कभी भुलना नही चाहिए ।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ0 ललिता

भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

शोध मंथन, जून 2018,
पेज सं0 78–83

Article No. 12
http://anubooks.com
?page_id=581

आधुनिकता बनाम प्राचीनता

आधुनिक संस्कृति प्राचीन हिन्दु मुस्लिम संस्कृतियों तथा पाश्चात्य संस्कृति का समन्वित रूप है। हमारी श्री संस्कृति में शादी विवाह को एक पवित्र बंधन माना जाता है। यहां जो स्त्री एक बार इस बंधन में बंध जाती है। वह जीवन भर अपने पति का साथ निभाती है। जबकि पाश्चात्य संस्कृति में महिला अपने जीवन साथी उसी प्रकार बदलती है जिस प्रकार लोग अपना कपडा बदलते है। मगर अफसोस है कि आज हम भी इस सभ्यता को अपनाकर पवित्र बन्धन को तोड़ डालने में कोई कोर कसर नही छोड रहे है। आज गर्भ से ही पता लगा दिया जाता है। कि पैदा होने वाली सेतान लडका है या लडकी। यदि लडकी है। तो उसे इस दुनिया में कदम तक नही रखने दिया जाता है।

सनातनता एवं निरन्तरता आदि काल से अजस्र प्रवाहित भारतीय संस्कृति में विरोधी आक्रमण संस्कृतियों के उपादेय तत्वों को ग्रहण कर अपने मूल रूप को वथावत् रखा। अपनी प्राचीन चिन्तरन पद्वति का उपहास अपने सांस्कृतिक परिवेष से घृणाएं अपनी परम्पराओं के प्रति आक्रमक रवैयों का विकास ब्रेनवाश का परिणाम है।

पवित्रता से व्यापार की ओर श्री जयदत्त पंत के शब्दों में हमारे तीर्थ अब पवित्रता के अर्थ को खोकर पर्यटन व्यवसाय के लिए आकर्षण का केन्द्र कहे जाने लगे। सभ्यता और कला के उत्कर्ष की प्रतीक हमारी मूर्तियॉ आदि तस्करी की शिकार हो गयी। जिनके आगे हमारी पिछली पीढी तक के कोटिशरू लोग धूप जलाकर माथा नवाते थे। वे विदेशों में करोडपतियों के उद्यासनों और निजी संग्रहालयों की शोभा बन गई। हमारे देवी देवताओं की कीमत लगाई गई और हमने उनको रात के अन्धेरे में बेच दिया।

कृत्रितता आज युवाओं के लिये सौन्दर्य का मापदण्ड ही बदल गया है। विश्व में आज सौन्दर्यप्रतियोगिता कराई जा रही है। जिससे सौन्दर्य अब व्यवसाय बन गया है। आज लडकियां सुन्दर दिख कर लाभ कमाने की अपेक्षा लिउ ऐन केन प्रकरण कर रही है। जो दयाएं क्षमाएं ममता त्याग की मूर्ति कहलाती थी उनकी परिभाषा ही बदल गईहै। आज लडकियां ऐसे ऐसे पहनावा पहन रही`। जो हमारे यहां अनुचित माना जाता है। आज युवाओं के आंतिरक मूल्य और सिद्धान्त भी बदल गये है। आज उनका उददेश्य मात्र पैसा कमाना^। उनकी नजर में सफलता की एक मात्र परिभाषा है। और वो है दौलत और शौहरत । चाहे वो किसी भी क्षेत्र में हो । इसके लिए भी करने को तैयार है।

वैयक्तिक आधुनिक संस्कृति अहम और निजी जीवन को महत्व देती है। अतः सर्वत्र अहम का बोल बाला है। के अहम की वृद्धि और निजि सुख की अभिलाषा आधुनिक संस्कृति के लक्षण है। प्रकृति और राज्य की विधि विविधताओं का तिरस्कार आधुनिक संस्कृति का उददेष्य विद्यार्थी विद्रोह पर उतारू है। कर्मचारी हडताल पर आमदा है। और अहम में डूबी सत्ता आतंक फैला रही है। दूसरी ओर निजि जीवन में पारिवारिक एकता नष्ट हो रही है।

संग्रह प्रवृति का विकास धन और सम्पति की संग्रह प्रविति आधुनिक संस्कृति का अंग है। जो भारतीय संस्कृति के त्याग के को दुत्कारती है। विभिन्न पदार्थो मे मिलावट करके तिजोरियां भरोए तस्करी करके अपनी अगली पीढ़ी को भी धनाढय बनाया।कानून के प्रहरियों को रिष्वत की

मार से क्रीतदास बनाया । विधि बेताओं की सहायता से कानून का पोस्टमारटम कर अपने पक्ष में निर्णय पलटवाए ।

भारतीय जीवन पर गहरा प्रभाव आधुनिक संस्कृति का भारतीय जीवन संस्कारों पर प्रभाव नकारा नही जा सकता पाष्चात्य संस्कृति जनमानस को विषेष रू॰ से युवाओं को अपनी गिरफत में ले लिया है। बाजारवाद की बाढ में नैतिक मूल्य बह गए है। इन्सानियत लुप्त सी होने लगी है। अनाचार दुराचार भ्रष्टाचार अत्याचार व्यभिचार रूपी दुषासन भारतीय संस्कृति रूपी द्रोपदी का चीर हरण करने लगे है। रिष्तों में मिठास की बजाय कटुता आ गयी है। हत्या व आत्महत्या की घटनाएं दिनोदिन बढरही है। स्वार्थ इस कदर हावी है कि अधिकांष लोग अपने लाभ के लिए दूसरों का नुकसान करने में जरा भी नहीं हिचकते है। रातों रात अमीर बनने की फिराक में खाद्य व पेय पदार्थो में मिलावट एवं कालाबाजारी घूसखोरी, अपहरण, लूट चोरी और ठगी जैसे नाजायज तरीके अपनाने लगे है। शराब ए शबाब और कबाब के शौकीन नेता और अभिनेता युवाओं को गुमराह कर रहे है। अक्ल पर शक्ल हावी होने लगी है। आज हम बच्चों का जन्मदिन मोमबत्ती बुझाकर मनाते है और विवाह संस्कारों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग पूजा पाठ को शीध्रतम निपटाना चाहते है। सप्त नदी और प्रतिज्ञाओं का मजाक उड़ाते है। विवाह मुकुट का स्थान टोपी ने ले लिया है। मृतक के तेरह दिन शास्त्रीय विधि विधान से कौन पूरे करता है।

उपभोक्ता संस्कृति की ओर आधुनिकता घर – घर में घुस गई। पाजामा– धोती, नाईट सूट बन गये है। पैंट बुषर्ट और टाई परिधान बने। जूते पहनकर मेज कुर्सी पर भोजन करने लगे। माता का चरण स्पर्ष मॉ के चुम्बन में बदला नारी के प्रति जो हमारे मन में भोगवाद की प्रवृत्ति है उसे बदलना होगा और पर नारी का भी सम्मान करना होगी। पब्लिक स्कूलों में ही हमे ज्ञान के दर्षन होते है। शराब और नषीली गोलियों में परम तत्व की प्राप्ति जान पड़ती है। केक काटकर और मोमबत्ती बुझाकर बर्थ डे मनाया जाता है।

पहनावा

सबसे अधिक परिवर्तन लोगों के वेषभूषा में आया है। धोती कुर्ताए पायजामा का प्रयोग पुरूषों में और साड़ियों का प्रयोग स्त्रियों में दुर्लभ होता जा रहा है। आज की स्त्रियॉ बडों के सामने सिर ढकने की हमारी पुरानी संस्कृति को भूलती जा रही हे। लडकियॉ पष्चिमी वेषभूषा के रंग में इस कदर रंग गई है कि शालीनता क्या चीज होती है भूल सी गयी है। इन सब के कारण दिन व दिन आपराधिक घटनाओं में वृद्धि होने लगी है। लड़कों की वेषभूषा भी अभद्रता का पर्याय बन चुकी है। भारतीय अपने पहनावे को छोडकर दूसरे देष के पहनावे को अपना रहा है।

भाषा

आज अंग्रेजी भाषा और संस्कृति के रंग में रंगने को ही आधुनिकता का पर्याय समझा जाने लगा है। प्रत्येक सरकारी कार्यालय में हिन्दी और अंग्रेजी द्विभाषी रूप में काम करना आवष्यक है। लेकिन आज भी कई सरकारी कार्यालय है जिनमें अंग्रेजी में ही कार्य किया जाता है। मिटिंग की जाती है और सम्प्रेषण भी अंग्रेजी में ही किया जाता है। जब हमारे भारत देष की अधिकारिक भाषा हिन्दी है तो क्यों उसे अपनाने में लोग कतराते है।

सामाजिक स्थिति

एक समय था जब हमारे युवाओं को आदर्ष सिद्धान्त विचार चिन्तन और व्यवहार सब कुछ भारतीय संस्कृति के रंग में रंगे हुये होते थे। वे स्वयं ही अपने संस्कृति के संरक्षक थे। परन्तु आज उपभोक्तावादी पाष्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से भ्रमित युवा वर्ग को भारतीय संस्कृति के अनुगमन में पिछडेपन का एहसास होने लगा है। संगीत हो या सौन्दर्य प्रेरणास्रोत की बात हो या राजनीति का क्षेत्र या फिर स्टेटस सिंबल की पहचान सभी क्षेत्रों में युवाओं की पाष्चात्य संस्कृति में ढली नकारात्मक सोच स्पष्ट परिलछित होने लगी है। आज हमें सांस्कृतिक विरासत में मिले शास्त्रीय संगीत व लोक संगीत के स्थान पर युवा पीढी ने पॉप संगीत को स्थापति करने का फैसला कर लिया है। सम्पन्नता दिखाकर हावी हो जाने का ये प्रचलन युवाओं को सबसे अलग एवं श्रेष्ठ दिखाने की चाहत के प्रतीक लगते है।

संस्कृति

भारतीय संस्कृति जिसमें कहा गया है अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ए चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्याायषोबलम् अर्थात जो नित्य प्रति माता पिता का आदर सम्मान एवं बडों बुजुर्गो की सेवा करते है उनकी आयु विद्याायें यष और बल में वृद्धि होती है। परन्तु पाष्चात्य संस्कृति में तो यह दूर – दूर तक नही दिखता। वस्तुत हम भारतीय अपनी परम्पराएं संस्कृति ए ज्ञान और यहॉ तक कि महान विभूतियों को तब तक खास तवज्जों नही देते जब तक विदेषों में उसे न स्वीकार किया जाये। यही कारण है कि आज यूरोपीय राष्ट्रों और अमेरिका में योग एवं आयुर्वेद, शाकाहार, प्राकृतिक चिकित्साएं यूनानी होम्योपैथी और सिद्धा जैसे उपचार लोकप्रियता पा रहे है। जबकि हम उन्हे बिसरा चुके है। हमें अपनी जड़ी बूटियों नीम हल्दी और गोमुत्र का ख्याल जब आता है जब अमेरिका उन्हे पेटेंट करवा लेता है। योग को हमने उपेक्षित करके छोड दिया पर जब वही योगा बनकर आया तो हम उसके दीवाने बने बैठे है। आयुर्वेदिक चिकित्सक एल्योपैथिक पद्वति से रोग दूर करते है। पूजा अर्चना में धूपदीप के स्थान पर बिजली के बल्व जलते है। पाष्चात्य संस्कृति में पले बसे लोग भारत आकर संस्कार और मंत्रोच्चार के बीच विवाह के बन्धन में बॅधना पसन्द कर रहे है। और हमें अपने ही संस्कार दकियानूसी और बकवास लगते है।

बोलचाल

हमारे देश में प्रत्ये राज्य की अपनी भाषा है। भाषाओं की विभिन्नता के समावेष के वावजूद भी अंग्रेजी को बोलचाल का माध्यम बनाया जाता है। मुझे समझ नही आता कि जितनी महेनत हम लोग अंग्रेजी सीखने में करते है। उतनी महेनत करके हम अपने ही भारत देष की किसी और भाषा सीखने में क्यों नही करते है। पाष्चात्य अथवा अंग्रेजी संस्कृति को दोष देने से पहले प्रत्येक भारतीय को अपने गिरेबान में झांक कर देखना चाहिए कि वो खुद अपनी संस्कृति के प्रति कितना निष्ठावान है।

सफाई

सीधी सच्ची बात है कि जब तक हमारे घर द्वार और रास्ते गन्दे रहेगें हमारी आदते गन्दी रहेगी तब तक हम अपने आपको सभय और सुसंस्कृत नही कह सकते। आज पूरा भारत और भारतीय समाज गन्दगी का अखाडा बन गया है। इस बात से न हम इन्कार कर सकते है न आप। विदेशों में सफाई के प्रति लोगों में जागरूकता आ चुकी है। और भारत में बच्चों को बचपन

से बड़ों के पैर छूनाए नमस्ते करना सिखाया जाता है। उसी तरह अमेरिका में बच्चों को कचरे को डस्टबिन में फेंकना सिखाया जाता है। जहां डस्टबिन नही होता वहॉ बच्चे कचरे को अपने बैग में रख लेते है। हमें भी कुछ ऐसी ही पहल कर अपनी कॉलोनी और शहर को स्वच्छ रख सकते है।

महंगाई

भारत में आज लोगों को मूलभूत सुविधाओं के लिये तरसना पड़ रहा है जैसे रहने के लिये घर नही है। पीने के लिए साफ पानी नही है।खाद्य पदार्थ की गुणवत्ता पर विश्वास नही किया जा सकता है। बिजली तो आती कम है जाती ज्यादा है। बढती महगाई ने सबको तंग किया हुआ है। महंगाई इन सारी समस्याओं पर ज्यादा भारी पडती है। क्योकि यदि महंगाई बढती है। तो वह इन सभी पर सीधे असर डालती है । सरकार चाहे इसका कोई भी कारण दे परन्तु आम आदमी इस महंगाई से त्रस्त है। महंगाई उनके जीवन को खोखला बना रही है। महंगाई हर जगह अपना मुंह फाडे खडी है । फिर वह कैसी भी क्यो न हो । जबकि विदेशों में महंगाई से लोग स्त नही है जर्मनी में अगर किसी के पास एक यूरो भी हो तो उससे कुछ खरीद कर खा सकता है। उसको भूखा नही मरना पडेगा वहां पर मेहनत करके रहा जा सकता है।

टी0वी0 चैनल भारत में टी0वी0 चैनलों की भरमार है। पहले सिर्फ हिन्दी में ही चैनलों का प्रसारण होता था । और चैनलों भी दो ही थे । लेकिन धीरे – धीरे चैनलों के साथ – साथ भाषाएं भी बढती गई । आज हिन्दी के साथ – साथ अन्य भारतीय भाषाओं में भी चैनलों का प्रसारण हो रहा है। जो एक अच्छी बात हैं लेकिन भारतीय चैनल अंग्रेजी को अब भी अपनाकर चल रहे है। विदेशों में उनकी स्थानीय भाषा में ही चैनलों का प्रयारण होता है। वहां मुश्किल से एक या दो चैनल ही अंग्रेजी में प्रसारित होते है। वहां अपनी स्थानीय भाषा को महत्व दिया जाता हैं इसी तरह भारतीय परिवेष में भी स्थानीय भाषा का वर्चस्व होना चाहिए ।

व्यवस्था प्रणाली भारत में कुछ भी व्यवस्थित रूप से नही है। चाहे वसे बस की लाइन हो दुकान में खरीददारी की लाईन हो या कही कालेज में प्रवेश लेने की लाईन हो दूर जगह धक्का मुक्की लगी रहती है। सडक पर ना वाहन चलानें की व्यवस्थित तरीका है। और ना ही पैदल चलने वालों को सडक पर चलने का तरीका आता है। सडको पर ध्वनि प्रदूषण की मारामारी है। लोग एक दूसरे से टकरा कर चलने में शान समझतेहै। लडकियों को छेडने के तो मामले आम हो गए है। भारत में लडकियों कही भी सुरक्षित नही है। भ्रष्टाचार हर जगह अपने पैर पसारे हुए विदेशों में हर जबह सुव्यवयवस्था समाई हुई है। वहां कोई भी किसी के व्यक्तिगत मामलों में व्यवस्थित ढंग से होने पर विदेश और विदेश के लोग तरक्की करते जा रहे है।

राजनीति भारतीय राजनीति अकंठ भ्रष्टाचार में डूब चुकी है। देश आर्थिक गुलामी की ओर अग्रसर है। ऐसे में भ्रष्टाचार और कुशासन से लोहा लेने के बजाय समझौतावादी दृष्टिकोण युवाओं का सिद्धान्त बन गया है। उनके भोग विलास पूर्ण जीवन में मूल्यों और संघर्षों के लिए कही कोई स्थान नही है।

प्रचार

प्रसार माध्यम आज भारत में हर प्रचार माध्यम के बीच स्वस्थ प्रतियोगिता के स्थान पर पश्चिमी मानदंडों के अनुसार प्रतिद्वद्धि को मिटाने की होड लगी हुई है। सनसनीखेज पत्रकारिता

के माध्यम से आज पत्र पत्रिकाएं ऐसी समाजिक विसेगितयों की घटनाओं की खबरों से भरी होती है। जिसको पढकर युवाओं की उत्सुकता उसके बारें मे और जानने की बढ जाती है। युवा गलत तरह से प्रसारित हो रहे विज्ञापनों से इतने प्रभावित हो रहे है। कि उनका अनुकरण करने में जरा भी संकोच नही कर रहे है।

संदर्भ

1. hi.encyclopediaofjainism.com/
2. www.sahityashilpi.com
3. hindiessaysforkids.blogspot.com
4. www.essaysinhindi.com
5. hindi.webdunia.com
6. https://shabd.in/post/2764/pashchaty-sanskrite-dushprabhav
7. www.jyotidehliwal.com
8. https://www.sahityakunj.net
9. Bhartiya Sanskriti by Dr. Kajal Bajpayi